जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वस्तु स्वरूप के अधिगम एवं प्रतिपादन में नयों का प्रयोग जैनदर्शन की मौलिक विशेषता है।

ह्न परमभावप्रकाशक नयचक्र,पृष्ठ : 29

वर्ष : 29, अंक : 10 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (द्वितीय), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

लंदन (यू.के.) में ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

लंदन : पश्चिमी देश यू.के. की राजधानी लंदन के श्री कुचलेवा पटेल स्पोर्ट्स एण्ड कम्यूनिटि हॉल में श्री दिगम्बर जैन एसोसिएशन लंदन के तत्त्वावधान में शुक्रवार, दिनांक 4 अगस्त से बुधवार, 9 अगस्त, 2006 तक श्री महावीरस्वामी जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

त्रैलोक्य आनंदकारी इस महा महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रासंगिक मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, ब्र. हेमन्त ए. गाँधी सोनगढ़, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, डॉ. किरीट पी. गोसलिया फिनिक्स-अमेरिका के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि **प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना** तथा सह-प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ़, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री अलीगढ़ द्वारा सम्पन्न कराई गई। सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि का निर्देशन पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़ एवं कार्यक्रमों का निर्देशन श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ ने किया।

लंदन की धरा पर बने विशाल ऐतिहासिक भव्य दिगम्बर जिनमंदिर में शासन नायक अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी की धातुमय, भगवान महावीरस्वामी की 61 इंच उन्नत पद्मासन धवल पाषाणयुक्त मनोहारी एवं भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमायें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान की गईं। इसके अतिरिक्त जिनवाणी माता एवं पूज्य आचार्यों के साथ-साथ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी आदि ज्ञानी धर्मात्माओं के चित्रपट भी स्थापित किये गये।

जन्म कल्याणक के अवसर पर विशाल कांच का पालना तथा 16 फीट ऊँचा ऐरावत हाथी विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भगवान महावीर के जीवन पर आधारित लघु नाटिका, मंगलायतन द्वारा प्रस्तुत 'महारानी चेलना द्वारा धर्मप्रभावना' तथा लंदन मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रस्तुत 'भरत-बाहुबली संवाद' प्रमुख थे।

विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निर्देशन पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री अलीगढ़ एवं श्रीमती वीणा जैन देहरादून ने किया।

महोत्सव को सफल बनाने में श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ़, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, श्री कहान-राज सर्वोदय ट्रस्ट मुम्बई, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल नैरोबी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली, श्री कुन्दकुन्द परमागम मंदिर ट्रस्ट सोनागिरि, आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट भावनगर, चैतन्यधाम-अहमदाबाद, श्री जैन स्वाध्याय मंदिर सोनगढ़-अमेरिका आदि संस्थाओं का विशेष सक्रिय सहयोग रहा।

महा महोत्सव के गौरवशाली पात्रों में **महाराजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला** बनने का सौभाग्य श्री नवनीत-सूर्यकलाबेन शाह को मिला।

सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री संदीप-स्मिता शाह, **कुबेर-कुबेरानी** श्री दिलीप-के.डी.शाह, **ईशान इन्द्र-इन्द्राणी** श्री सोभाग-लीला बेन शाह, **सानत इन्द्र-इन्द्राणी** श्री दीपक-दीप्ति शाह, **माहेन्द्र इन्द्र-इन्द्राणी** श्री भीमजी-पुष्पाबेन शाह, **यज्ञनायक** श्री महेन्द्रमेघजी-सूर्यकला शाह तथा **महामंत्री** श्री लक्ष्मीचंद-सूर्यकला बेन शाह थे।

महोत्सव में ध्वजारोहण श्री हंसराज देवराज शाह ने तथा जिनमंदिर का उद्घाटन श्री महेन्द्र-शशी शाह परिवार ने किया। मूलनायक प्रतिमा विराजमानकर्त्ता श्री भगवानजी कचराभाई शाह परिवार, विधिनायक विराजमानकर्त्ता श्री शांतिलाल वीरजी शाह परिवार एवं भगवान पार्श्वनाथ प्रतिमा विराजमानकर्त्ता श्री दिनेश शाह परिवार थे। जन्म कल्याणक के दिन प्रथम पालना-झूलन का सौभाग्य श्री प्रफुल्ल डी. राजा परिवार को मिला।

प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनकर एम. शाह तथा मंत्री श्रीमती शीतलबेन बी.शाह के साथ-साथ दिगम्बर जैन एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री भीमजीभाई शाह और उनका पूरा परिवार पंचकल्याणक महोत्सव में नीव के पत्थर के समान कार्यरत थे; जिनमें कमल, विजेन, हेमल, मिलन, दीपक, मनीष आदि प्रमुख थे। यातायात व्यवस्था की पूरी जिम्मेवारी श्री जयन्तीभाई गुटका संभाल रहे थे। ●

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

११. पति के स्थान की पूर्ति संभव नहीं

नारी के जीवन में सबसे बड़ा दु:ख उसके वैधव्य का होता है। इससे अधिक दु:खद स्थिति नारी के जीवन में अन्य कोई नहीं हो सकती। दुर्दैव से यदि यह दु:खद परिस्थिति विवाह के तुरन्त बाद ही बन जाये, तब तो मानो उस पर विपत्तियों के पहाड़ ही टूट पड़ते हैं। पति के अभाव में सारा जीवन अंधकारमय तो बन ही जाता है, साथ ही और भी अनेक विपत्तियों की घनघोर घटायें घेर लेती हैं। पति के परिवार और पड़ौसियों का दुर्व्यवहार तथा पीहर की उपेक्षा उसे जीते जी नरक में धकेल देते हैं, उसका जीना ही दूभर कर देते हैं।

रूपश्री के ससुराल पक्ष से सहानुभूति और सहारा मिलने के बजाय सब ओर से हृदय-विदारक वाक्यावली ही सुनाई देने लगी। तानों के वचन-वाण उसके हृदय को बेधते ही रहते।

सासूजी कहती ह्न ''डायन है, डायन ! दुष्टा ने देहरी पर पाँव रखते ही खा लिया मेरे लाल को।''

हाँ में हाँ मिलाते पत्नी-भक्त श्वसुर साहब के मुँह से निकलता ह्न''कुलक्षणी है कुलक्षणी। ज्योतिषीजी ने भी क्या देखकर संजोग बैठा दिया ? देखो न ! घर में पाँव पड़ते ही बेटा तो जीवन से हाथ धो ही बैठा, मार्केट की भी क्या हालत हो गई ? लाखों की चोट लग गई धंधे में।''

पास में खड़ा एक भोला-सा बालक बोला ह्न अंकल ऐसे धंधे के चक्कर में पड़े ही क्यों हो ? कोई ऐसा धंधा क्यों नहीं कर लेते, जिसमें न कोई जान की जोखम हो और न आकुलता उत्पन्न करनेवाली अधिक हानि हो।

अंधविश्वासी जेठजी उस बालक को डाँटते हुए बोले ह्न ''अब ये छोकरा हमें बिजनिस करना सिखायेगा। ''अरे ! यह जो भी हुआ सो तो हुआ ही, इस कुलक्षणा के पदार्पण से मेरा तो हाल ही बेहाल हो गया। हत्या के अपराध में चल रहे फौजदारी मुकदमे में मैं सुप्रीम कोर्ट से भी हार गया हूँ। अब आजीवन कारावास तो पक्का ही समझो। फाँसी की सजा भी हो सकती है।''

वह बालक हिम्मत करके पुन: बोला ह्न ''नम्बर दो का धंधा किया ही क्यों ? जिससे मैं-मैं, तू-तू के साथ मारपीट की नौबत आ गयी और हथियार हाथ में होने से पार्टनर की हत्या हो गई।''

ननद कहती ह्न ''बबुआ ! तू बार-बार बीच में क्यों बोलता है? क्या तू चुप नहीं रह सकता, अभी जमीन से ऊपर तो उठा नहीं, करने लगा नं. एक और नं. दो बिजनिस की बातें।

अरे ! जब से इस कलमुँही भाभी का मुँह देखा, तभी से मेरा घरवाला तो दिन-दूनी रात-चौगुनी पीने लगा है। पहले मुझसे थोड़ा-बहुत प्रेमालाप कर भी लेता था; पर अब तो मेरी ओर झाँक कर भी नहीं देखता। जब देखो तब इसी के गुण गाया करता है। निकालो डायन को इस घर से। पता नहीं और किस-किस को अपने वश में कर लेगी यह ?

पन्द्रह दिन में ही रूपेश भैया पर तो इसने ऐसा जादू कर दिया था, उनका ऐसा मन मोह लिया था कि कुछ पूछो मत। मुहल्ले वाले भी इसकी तारीफ करते नहीं थकते। अड़ौसी-पड़ौसी रूपेश भैया को याद करने के बजाय, उनके वियोग पर दु:ख प्रगट करने के बजाय इसके प्रति ही सहानुभूति दिखा-दिखा कर इसके ही दु:ख को रोया करते हैं। ऐसी कौन-सी जादुई विद्या है इसके पास ? कौन-सा मोहिनी मंत्र जानती है यह, जो सभी लोग इसकी बातों और व्यवहार से प्रभावित हो जाते हैं।''

इस तरह ननद ने भी रूपश्री पर अत्याचार और करके दुर्व्यवहार से उसके वैधव्य के गहरे घावों पर नमक छिड़कने का ही काम किया। न केवल सताया ही, अमंगल के भय से घर से भी निकाल दिया। सब तरह से बे-सहारा रूपश्री बे-मौत मरने के बजाय माँ की शरण में चली गई।

'महिलाओं में इतनी अक्ल ही कहाँ होती है, इतनी दूरदर्शिता भी कहाँ होती है' ह्न ऐसा कहकर सम्पूर्ण नारी जाति को अपमानित तो नहीं किया जाना चाहिए; पर अधिकांश महिलाओं की ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति है कि उन्हें दूसरी महिलाओं का दु:ख-दु:ख-सा ही नहीं लगता। दूसरों पर क्या बीत रही है, इसका अहसास ही नहीं होता। **'वस्तुत: महिलायें ही महिलाओं की सबसे बड़ी शत्रु होती हैं'** यदि यह कहा जाय तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी; **परन्तु इस मनोवृत्ति में आमूलचूल परिवर्तन लाने की महती आवश्यकता है। अन्यथा नारी जाति इसीतरह अपमानित और प्रताड़ित होती रहेगी।** जैसी कि दुर्घटना में रूपेश के दिवगंत हो जाने से उसके ससुराल वालों के द्वारा रूपश्री की दुर्दशा हुई।

पुरातन पन्थी नारियाँ अपने अन्धविश्वास के कारण अपनी ही नारी जाति की कितनी/कैसी वैरिन बन जातीं हैंह्न कोई सोच भी नहीं सकता और अदूरदर्शी, अविवेकी पुरुष भी उनकी हाँ में हाँ मिलाकर उनका साथ देने में दो कदम आगे हो जाते हैं।

मांगलिक माने जाने वाले विवाह आदि के नेग-दस्तूरों में महिलायें ही विधवा नारी की परछाईं से परहेज करने लगतीं हैं। नन्हें-नन्हें बालक-बालिकाओं को भी विधवा के पास नहीं फटकने देतीं।

नारियों की ऐसी दयनीय दुर्दशा देख, कामी पुरुषों की कुदृष्टि उन्हें शान्ति से जीने नहीं देती। दुर्दैव की मारी ऐसी नारियाँ शिकारियों के शिकंजे से छूटीं भयभीत मृगी की भाँति माँ की ममता को याद करके यदि पीहर के शरण में पहुँच जायें तो पीहर के लोग भी उन्हें अपने माथे का बोझ समझकर अपनी बला टालने के लिए उनका पुनर्विवाह करने की सोचने लगते हैं।

माँ में तो बेटियों के प्रति स्वाभाविक रूप से भी ममता होती है, यदि बेटी बाल-विधवा हो जाय तब तो माँ की ममता और उसके दु:ख के बारे में कहना ही दुष्कर है; परन्तु वह बेचारी अकेली कर भी क्या सकती है ह्न जब भाई-भाभियाँ और पिता मिलकर एक मत हो जायें। ऐसी स्थिति में माँ को मौन रखने के सिवाय अन्य उपाय ही क्या है ? परिस्थितियों से समझौता कर माँ द्वारा कदाचित मजबूरी में पुनर्विवाह को मान्यता दे भी दी जाये तो भी बेचारी विधवा नारी की समस्या समाप्त नहीं होती; क्योंकि विधवा से कौन कुँवारा ब्याह करना चाहेगा। उसे तो कोई विधुर ही अपना सकता है। कम उम्र के विधुर भी विधवा को सहज स्वीकार नही करते; क्योंकि जिन्हें एक से बढ़कर एक कुमारियाँ मिल सकती हैं, भला वह विधवा से शादी क्यों करेगा ? उसे यह भी आशंका बनी रहती है कि 'यदि इसके भाग्य में पति होता तो पहला ही क्यों मरता ? इस स्थिति में मैं अपनी जान को जोखिम में क्यों डालूँ ?' इस आशंका से भी विधवाओं का योग्य व्यक्ति के साथ पुनर्विवाह होना अत्यन्त कठिन होता है। अतः इस दिशा में सोचना ही व्यर्थ है।

(क्रमश:)

दशलक्षण महापर्व के पावन प्रसंग पर धर्मप्रभावना हेतु कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। 28 अगस्त 2006 से प्रारम्भ हो रहे इस महापर्व हेतु दिनांक 10 अगस्त 2006 तक हमारे पास 454 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं तथा अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण आ रहे हैं।

दिनांक 08 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 405 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 225 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक एवं वर्तमान छात्र विद्वान ही जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ।

विशिष्ट विद्वान ह्न 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **2.इन्दौर (साधनानगर) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, **3.अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, **4.इन्दौर (माणक चौक):** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर, **5.रूकडी :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, **6.राजकोट :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, **7.भोपाल (चौक) :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, **8.अलवर :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, **9.हिंगोली :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना, **10.कोलकाता (पद्मोपुकुर) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **11.बीना :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना, **12.मलकापुर :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, **13. दुर्ग :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, **14. जबलपुर :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **15.बैंगलोर :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, **16.विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **17. जबलपुर :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **18. अशोकनगर :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, **19. इन्दौर (साधना नगर) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **20.अलीगढ़ :** पण्डित अशोककुमारजी लुहाडिया, **21.मंगलायतन :** पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर।

विदेश ह्न 1.नैरोबी (अफ्रीका) : पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, **2.वाशिंग्टन (अमेरिका)** : पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, **3.वाशिंग्टन (अमेरिका)** : विदुषी उज्ज्वलाजी शहा मुम्बई, **4.बैंकाक :** पण्डित भरतभाई शाह मुम्बई, **5.लंदन :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट, **6. शिकागो :** विदुषी अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रान्त ह्न 1.विदिशा (स्टेशन) : पं. चन्दुभाईजी जैन फतेपुर, **2.भोपाल (कोहेफिजा)** : ब्र. नन्हेलालजी सागर, **3.भिण्ड (देवनगर) :** पं.महेशचन्दजी जैन ग्वालियर, **4.उज्जैन :** पं.धनसिंहजी पिड़ावा, **5.गुना (मुमुक्षु मण्डल) :** विदुषी आशाजी मलकापुर, **6. इन्दौर (न्यू पलासिया)** : ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर, **7.अंबाह (बडा मंदिर) :** पं. नेमीचन्दजी ग्वालियर, **8–9.सागर (मु. मण्डल) :** पं. पद्मकुमारजी अजमेरा रतलाम एवं पं. सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, **10.टीकमगढ :** पं. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, **11–12.छिन्दवाडा :** पं. प्रवीणजी जैन जयपुर एवं पं. ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, **13. करेली :** पं.शिखरचन्दजी जैन विदिशा, **14. ग्वालियर (फालका बाजार):** पं. अरूणजी मोदी सागर, **15.खनियांधाना :** पं. सुबोधजी सिंघई सिवनी, **16.भिण्ड (परमागम) :** पं.सुदीपजी बीना, **17.इन्दौर (लश्करी मन्दिर) :** पं. दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, **18.इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पं. निर्मलजी जैन सागर, **19.सिवनी :** पं.सुरेन्द्रजी 'पंकज' छिन्दवाड़ा, **20.बावनगजा :**विदुषी राजकुमारी जैन जयपुर, **21.भोपाल (पिपलानी) :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, **22.इन्दौर (नरसिंगपुरा) :** पं. सतीशजी कासलीवाल महिदपुर, **23.इन्दौर (गांधीनगर) :** पं.विमलजी जैन अशोकनगर, **24.रतलाम (चांदनी चौक) :** पं. संजयजी सेठी जयपुर, **25–26.खुरई :** पं.रमेशचन्दजी 'दाऊ' जयपुर एवं विदुषी कु. स्वाती जैन जयपुर, **27.सिद्धायतन (द्रोणगिरि):** पं. राजुभाईजी कानपुर, **28.आरोन :** पं. सुरेशचन्दजी सिंघई 'इन्जि.' भोपाल, **29.गौरझामर :** पं. निलेशजी जैन जबलपुर, **30.सागर (मकरोनिया) :** पं.कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर, **31.लुकवासा :** पं. रविकुमारजी जैन ललितपुर, **32–33.मौ :** पं.सतीशचन्दजी जैन पिपरई एवं पं. राजेन्द्रजी जैन पिपरई, **34.चन्देरी :** पं. मनोजजी जैन जबलपुर, **35.बड़नगर :** पं. अनिलकुमारजी पाटोदी बड़नगर, **36.शाहपुर :** पं. निलेशजी जैन छिन्दवाड़ा, **37–38.कोलारस :** पं.अजितजी जैन फिरोजाबाद एवं पं.सुकुमालजी शास्त्री लुकवासा, **39.राघौगढ़ :** पं. रूपचन्दजी जैन बण्डा, **40.केसली :** पं. नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, **41. भोपाल (कस्तूरबानगर) :** पं.जीवनजी शास्त्री घुवारा, **42.दलपतपुर :** पं. निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **43.बाकल :** पं.शिखरचन्दजी जैन सिवनी, **44.जगदलपुर :** पं. महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, **45.जबेरा :** पं.नंदकिशोरजी गोयल विदिशा, **46.ग्वालियर (माधोगंज) :** पं. अभयकुमारजी जैन बदरवास, **47.लुहारदा :** पं. सरदारमलजी जैन बेरसिया, **48.शहडोल :** पं.महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, **49.नागदामण्डी :** पं. प्रमोदजी जैन सागर, **50.मन्दसौर (कालाखेत) :** पं.शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **51.भोपाल (चौक) :** विदुषी समताजी झांझरी उज्जैन, **52. इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पं.अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, **53–54. मन्दसौर (नरसिंगपुरा) :**पं.फूलचन्दजी मुक्किरवार एवं विदुषी मंजूषाजी मुक्किरवार हिंगोली, **55.सागर (तारण–तरण) :** पं. पद्मचन्दजी सर्राफ आगरा, **56.निसई :** कपूरचन्दजी समैया सागर, **57.अकाझिरी :** पं. सुनीलजी जैन रामगढ़, **58. बेगमगंज :** पं.नितुलजी जैन भिण्ड, **59.रतलाम (स्टेशन) :** पं. शीतलजी हेरवाडे कोल्हापुर, **60. महिदपुर :** पं. अमितजी शास्त्री गुना, **61.जावरा :** पं.हीरालालजी गंगवाल, **62.ग्वालियर (दानाओली) :** पं. सत्येन्द्रजी बीना, **63.कालापीपल :** पं.महेन्द्रजी सेठी, **64. टीकमगढ़ :** पं. अरुणकुमारजी जैन, **65. अशोकनगर :** पं. अमोलकचन्दजी जैन, **66. उज्जैन :** पं. बेलजीभाई शाह, **67.कर्रापुर :** पं. धनप्रसादजी जैन, **68.बण्डा :** पं. कपूरचन्दजी भाईजी, **69.खनियांधाना :** पं. ताराचन्दजी जैन, **70.रांझी (जबलपुर) :** पं.अंकितजी शास्त्री खनियांधाना, **71.घोडाडूंगरी :** पं. सुरेशचन्दजी जैन, **72–74. भोपाल :** पं. अनुरागजी बडकुल, पं.राजमलजी पवैया एवं डॉ. महेन्द्रजी शास्त्री गुढा,**75.शाहगढ़ :** पं. चित्तरंजनजी छिन्दवाड़ा, **76. इन्दौर (माणक चौक)**: पं.जिनेन्द्रजी नन्देश्वर नन्दगाँव, **77.कटनी :** पं.संतोषजी जैन शास्त्री, **78.ग्यारसपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री, **79.लोहारदा :** पं. छगनलालजी जैन, **80.सिवनी :** पं.

कपूरचन्दजी भारिल्ल, 81–83.**ग्वालियर :** पं. धनेन्द्रजी सिंघल, पं. सुनीलजी जैन एवं पं.अजितजी जैन, 84.**खैरागढ़ :** पं. दुलीचन्दजी जैन, 85.**सिलवानी :** पं.संजयजी शास्त्री खनियांधाना, 86.**बीना :** पं. राजेशजी जैन, 87.**पचमढ़ी :** पं.सोनलजी शास्त्री जबेरा, 88.**मंडला :** पं.अर्पितजी शास्त्री बड़ामलहरा, 89.**पथरिया :** पं. नेमीचन्दजी जैन, 90.**ब्यावरा :** पं.निपुणजी शास्त्री टीकमगढ़, 91.**धामनोद :** पं.राहुलजी शास्त्री अलवर, 92.**रन्नौद :** पं. मयंकजी शास्त्री बांसवाड़ा, 93.**बड़गाँव :** पं. प्रमेशजी शास्त्री जबेरा, 94.**मौ :** पं.शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, 95.**करेरा :** पं. शाकुलजी शास्त्री मेरठ, 96. **सनावद :** पं.एलमचन्दजी शास्त्री गडखेडा।

महाराष्ट्र प्रान्त ह्न 1.**मुम्बई (बोरिवली) :** पं.रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 2.**मुम्बई (सीमन्धर) :** पं.अनिलजी शास्त्री भिण्ड, **मुम्बई (घाटकोपर) :** पं.कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, 4.**मुम्बई (दादर) :** पं.राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, 5.**मुम्बई (भूलेश्वर) :** पं.संजयजी शास्त्री अलीगढ़, 6.**मुम्बई (मलाड) :** पं.सुशीलजी जैन राधौगढ़, 7.**मुम्बई (दहीसर) :** पं.मीठाभाईजी दोशी हिम्मतनगर, 8.**मुम्बई (भायन्दर–वेस्ट) :** पं.सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन, 9.**मुम्बई (वसई) :** पं. ऋषभकुमारजी शाह अहमदाबाद, 10.**मुम्बई (जोगेश्वरी–ईस्ट) :** पं.अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, 11.**मुम्बई (अन्धेरी–ईस्ट) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, 12.**मुम्बई (डोम्बिवली) :** पं.अशोकजी मांगुलकर राधौगढ़, 13.**नागपुर (इतवारी) :** पं. अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, 14.**देवलाली :** विदुषी पुष्पाबेनजी खण्डवा, 15–16.**गजपंथ (सिद्धक्षेत्र) :** पं.धन्यकुमारजी बेलोकर एवं पं. मथुरालालजी जैन इन्दौर, 17.**जलगाँव:** पं.बाबूभाईजी फतेपुर, 18.**फलटण :** पं.कमलेशकुमारजी मौ, 19.**पुणे (स्वा. भवन) :** पं.मानमलजी जैन कोटा, 20.**रामटेक :** चन्दनमलजी शाह नातेपुते, 21.**पुणे (चिंचवड़) :** पं.नन्दकिशोरजी मांगुलकर, 22.**पंढरपुर:** पं.विनोदकुमारजी गुना, 23.**देवलगाँवराजा :** पं. केशवजी जैन नागपुर, 24.**चिखली** : विदुषी सुधाबहनजी छिन्दवाड़ा, 25. **शिरडशहापुर :** पं.प्रशांतकुमारजी काले, 26.**यवतमाल :** पं. विजयजी राऊत रीठद, 27.**कुम्भोज बाहुबली :** पं.नेमीनाथजी बालिकाई, 28.**सेलू :** पं. सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, 29.**पुसद :** पं. सतीशजी बोरालकर डोणगाँव, 30.**मुम्बई (अणुशक्तिनगर) :** पं.सुमेरचंदजी बेलोकर, 31.**औरंगाबाद :** पं.धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, 32.**जयसिंगपुर :** पं. विजयसेनजी पाटील आलते, 33.**कारंजा (लाड) :** पं. जीवराजजी जैन नासिक, 34.**मुम्बई(एवरशाइननगर):** पं.विपिनजी शास्त्री, 35.**मुम्बई :** पं.अनिलजी शास्त्री मुम्बई, 36.**मुम्बई :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 37.**पानकन्हेरगाँव :** पं. अशोकजी मिरकुटे, 38–39.**सोलापुर (आदिनाथ मन्दिर) :** पं.विक्रान्तजी शाह एवं पं.विजयजी कालेगोरे, 40.**परभणी :** पं.महावीरजी मांगूलकर, 41.**हिंगणघाट :** पं.श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, 42.**नागपुर :** पं.मधुकरजी गडेकर, 43–44.**एलोरा:** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर एवं पं.प्रदीपजी माद्रप, 45. **सावदा :** पं.दिलीपजी महाजन मालेगाँव, 46–48. **कारंजा (लाड) :** पं.धन्यकुमारजी भोरे, पं. आलोकजी शास्त्री एवं पं. परागजी महाजन , 49.**सेलू :** पं.अशोकजी वानरे, 50.**पुणे (जैन बोर्डिंग) :** पं. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, 51.**सांगली :** पं.महावीरजी पाटील, 52. **नागपुर (इतवारी) :** पं.प्रियंकजी शास्त्री रहली, 53–55.**देवलगांवराजा :** पं. विजयकुमारजी आह्वाने, पं.उमाकांतजी बंड एवं पं.सत्येन्द्रजी मिरकुटे पान्हकन्हेरगाँव, 56.**कन्नड :** पं.सचिनजी पाटनी, 57–60.**हिंगोली :** पं. पद्माकरजी दोडल, पं.अमोलजी संघई, पं. विशालजी कान्हेड एवं पं.संतोषजी सावजी अम्बड, 60. **गजपंथा :** पं. संतोषजी उखलकर, 61. **डासाला :** पं. आकेशजी छिन्दवाड़ा, 62. **अकोला :** विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर, 63. **नातेपुते :** पं. शीतलचंदजी दोशी, 64. **कचनेर :** पं. संजयजी राऊत, 65. **वसमतनगर :** पं. विजयजी बोरालकर वाघजाली, 66. **सोलापुर (बुवने मन्दिर) :** पं. सुनीलजी बेलोकर सुल्तानपुर, 67.**सोलापुर (कासार मन्दिर) :** पं.रवीन्द्रजी काले कारंजा, 68.**शिराढोण :** पं.प्रवीणजी पाटील हेरले, 69.**रिसोड :** पं.मुकुंदजी ढोके वसमतनगर, 70.**मुम्बई (दादर) :** पं.अतुलजी जैन बांसवाड़ा, 71.**पाथर्डी :** पं. विवेकजी सातपुते डोणगाँव, 72. **हेरले :** पं.जिनचन्दजी आलमान, 73–76.**कोल्हापुर क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर :** पं.अभिनन्दनजी पाटील, पं. दीपकजी अथणे, पं.अनिलजी आलमान एवं पं. भरतजी अलगोंडर बाहुबली, 77.**अक्कलकोट :** पं.रोहनजी रोटे, 78.**साडवली :** पं. प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.**बडोदरा :** पं.प्रकाशदादाजी झांझरी उज्जैन, 2.**हिम्मतनगर :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 3.**अहमदाबाद (पालडी) :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री, खैरागढ़ 4.**अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं.मांगीलालजी जैन करावली, 5.**अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, 6.**अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, 7.**तलोद :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन, 8.**तलोद :** विदुषी पुष्पलताजी झांझरी उज्जैन, 9.**वापी :** पं. विपुलजी मोदी सागर, 10.**अहमदाबाद (मणीनगर) :** पं. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, 11.**रखियाल :** पं.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 12.**मोरबी :** पं. देवेन्द्रजी बण्ड नागपुर, 13.**जेतपुर :** पं. रीतेशजी शास्त्री अहमदाबाद,14.**पोरबन्दर :** पं. संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, 15. **अहमदाबाद (सरसपुर) :** पं. वरुणजी शास्त्री मुम्बई, 16. **अहमदाबाद (ओढव) :** पं. जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, 17–20. **सूरत :** पं. अरूणजी शास्त्री मौ, पं. नितिनजी शास्त्री भिण्ड, पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, पं. विकासजी शास्त्री खनियांधाना 21.**अहमदाबाद :** पं.नवीनजी जैन, 22–23. **नवसारी :** पं. चैतन्यजी सातपुते नासिक एवं पं. संतोषजी बोगार सोलापुर, 24. **राजकोट :** पं. सुनीलजी जैनापुरे।

उत्तरप्रदेश प्रान्त ह्न 1.**आगरा (नमकमंडी) :** पं.अजितजी मड़ावरा, 2.**ललितपुर :** पं. पद्मचन्दजी गंगवाल इन्दौर, 3. **मेरठ (तीरगरान) :** विदुषी ब्र. कल्पनाबेनजी सागर, 4. **शिकोहाबाद :** पं. रमेशजी 'मंगल' सोनगढ़ 5. **बांदा :** पं.देवेन्द्रजी सिंगोडी 6. **सहारनपुर :** पं. सुरेशजी 'इन्जि' सागर 7. **मुजफ्फरनगर :** पं. प्रद्युम्नजी जैन 8. **मैनपुरी :** पं. जगदिशसिंहजी पवांर उज्जैन, 9.**गुरसराय :** पं. रमेशचन्दजी जैन करहल, 10.**सुल्तानपुर :** पं. मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, 11.**डांडा–इटावा :** पं.अरूणजी जैन बानपुर, 12. **धामपुर :** पं. प्रदीपजी शास्त्री, 13. **कुरावली :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, 14. **रूड़की :** पं. रीतेशजी शास्त्री सनावद, 15. **कानपुर (किदवईनगर)** : पं.आशीषजी शास्त्री भिण्ड, 16. **बरेली :** पं. विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, 17.**खतौली :** पं. सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद,18. **गंगेरू :** पं. विमलजी जैन जलेसर, 19. **फिरोजाबाद (जैन भवन) :** पं.पुष्पेन्द्रजी जैन बानपुर, 20. **मेरठ (शास्त्रीनगर)** : पं.विकासजी शास्त्री बानपुर, 21–22.**कानपुर (मुमुक्षु मं.) :** पं. अनिलजी 'धवल'भोपाल एवं पं.पुनीतजी मंगलायतन, 23. **बडौत :** पं.कमलकुमारजी मल्हैया जबेरा, 24. **कैराना** : पं.विवेकजी शास्त्री पिड़ावा, 25. 26.**जैतपुरकलाँ :** पं. अतुलजी शास्त्री ललितपुर, 27–28.**अलीगढ़ :** पं.सतीशजी शास्त्री मौ एवं पं.नितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, 29–30.**खतौली :** पं.सोनूजी शास्त्री एवं पं.कल्पेंद्रजी जैन, 31. **सुलतानपुर :** पं. देवचन्दजी जैन, 32. **शामली :** पं.सलेकचन्दजी जैन 33. **कानपुर (कारवालोनगर) :** पं.अंकुरजी शास्त्री देहगाँव।

राजस्थान प्रान्त ह्न 1.उदयपुर (मुमुक्षु मंडल) : पं. देवेन्द्रजी जैन बिजौलियाँ, **2. उदयपुर (केशवनगर) :** पं. कोमलचन्दजी जैन टड़ा, **3.भीण्डर :** पं. जयकुमारजी जैन बांरा, **4.अजमेर :** डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, **6.पिडावा :** पं.सुरेशजी जैन टीकमगढ़, **7.कोटा (मुमुक्षु मं.) :** पं. मनीषजी शास्त्री रहली, **8.बांसवाड़ा :** पं. नागेशजी जैन पिड़ावा, **9.किशनगढ :** पं.अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ़, **10.कोटा (इन्द्रविहार) :** पं.मनोजजी जैन करेली, **11.भीलवाडा :** पं.गुलाबचन्दजी बीना, **12.बिजौलियाँ :** पं.महेन्द्रजी सागर, **13.पीसांगन :** पं.मधुकरजी जलगाँव, **14.चित्तौडगढ़ :** पं.विमलचंदजी लाखेरी, **15.प्रतापगढ़ :** पं. चन्दुलालजी जैन कुशलगढ़, **16.अलीगढ़ :** विदुषी ब्र. विमलाबेनजी जयपुर, **17.निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी नाके, **18.उदयपुर (प्रभातनगर) :** पं.वीरेन्द्रजी 'वीर' फिरोजाबाद, **19.उदयपुर (से.11) :** पं.खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, **20.बनियानी :** पं.धरमचन्दजी जैन जयथल, **21.कुशलगढ़ (तेरापंथी) :** पं.अशोकजी जैन उज्जैन, **22.अजमेर :** पं.सुनीलजी धवल भोपाल, **23.लूणदा :** पं.ज्ञानचन्दजी जैन झालावाड़, **24.डूंगरपुर (पत्रकार कालोनी) :** पं.लखमीचंदजी जैन, **25.प्रतापगढ़ :** पं. चन्दूलालजी जैन कुशलगढ़, **26.बेरी :** पं.माणिकचंदजी जैन बेरी, **27.करावली :** पं.भंवरलालजी जैन कोटा, **28–30.अलवर :** पं.कांतिकुमारजी नरसिंगपुरा इन्दौर, पं.प्रेमचंदजी जैन एवं पं.अजीतजी शास्त्री, **31.देवली :** पं.वीरेन्द्रजी शास्त्री विराटनगर, **32–33.प्रतापगढ़ :** पं.सज्जनलालजी सांवरिया एवं पं. सुनीलजी शास्त्री, **34.रूपाहेडीकलां :** पं.पद्माकरजी मंजूले, **35.बस्सी :** पं.कृष्णचन्दजी शास्त्री भिण्ड, **36.बांरा :** पं.संजीवजी शास्त्री, **37.शाहबाद :** पं.भगवतीप्रसादजी शास्त्री, **38.टामटिया :** पं. प्रमोदजी जैन, **39.महावीरजी :** पं.नेमीचन्दजी जैन **40.नौगामा :** पं.शीतलजी शास्त्री, **41–42.कुचामनसिटी :** पं.राजेशजी शास्त्री गुढा एवं पं.संदीपजी शास्त्री विनौता, **43.सरदारशहर :** पं. मनीषजी 'कहान' खडैरी **44.डूँगरपुर :** पं.श्रीपालजी जैन घाटोल, **45.बून्दी (नैनवाँ रोड) :** पं.अरहंतवीरजी शास्त्री फिरोजाबाद, **46.वल्लभनगर :** पं.मीठालालजी भगनोत उदयपुर, **47.निवाई :** पं.राजीवजी शास्त्री अलवर, **48.उदयपुर (गायरियावास) :** पं.अनुजजी शास्त्री जयपुर, **49. पीठ :** पं.धीरजजी शास्त्री जबेरा, **50.लाम्बाखोह :** पं. प्रक्षालजी शास्त्री उदयपुर, **51.उदयपुर (नेमीनाथ कॉ.) :** पं.अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **52.कुरावड़ :** पं.नयनजी शाह हैदराबाद, **53.रावतभाटा :** पं.अभयजी शास्त्री खडैरी, **54–55. बांसवाड़ा :** पं. गणतंत्रजी शास्त्री खरगापुर एवं पं.आकाशजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, **56.कुशलगढ़ (शांतिनाथ) :** पं.सचिनजी जैन जबेरा, **57.भैसरोडगढ़ :** पं. संजयजी शास्त्री।

अन्य प्रान्त ह्न 1.भागलपुर : पं. रतनचन्दजी चौधरी कोटा, **2.कोलकाता (खडगपुर) :** पं. अशोकजी शास्त्री रायपुर, **3.पोन्नूरधाम :** पं.बाँकेबिहारीजी शास्त्री चेन्नई, **4.कोलकाता (पद्मोपुकुर) :** पं.अभिनवजी शास्त्री जबलपुर, **5.कोयम्बटूर :** पं. अखिलेशजी शास्त्री बरां, **6.हिसार :** पं.अभिषेकजी शास्त्री रहली, **7.रानीपुर :** पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, **8.कोलकाता (बाली) :** पं.संभवजी शास्त्री नैनधरा, **9.एर्नाकुलम :** पं.समकितजी शास्त्री सिलवानी, **10.लुधियाना :** पं. सुदीपजी शास्त्री बरगी, **11–12.बिनौली :** पं.निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पं. राजकुमारजी बरगी, **13.कोलकाता (बेलदा) :** पं. स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, **14.बिजनौर :** पं. सौरभजी शास्त्री गढ़ाकोटा,**15.कनकगिरि :** पं. नाभिराजनजी शास्त्री, **16.श्रवणबेलगोला :** पं. शान्तिसागरजी शास्त्री,**17.चम्पापुर :** पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा, **18.हुबली :** पं. रमेशजी शिरहट्टी बाबानगर, **19.सत्तूर (धारवाड़) :** पं. अभिजीतजी अलगौंडर, **20.बैंगलोर :** विदुषी कु. परिणति पाटील जयपुर, **21.चिक्कोडी :** पं. संयमजी शेटे कोल्हापुर, **22.गोहाना :** पं. राहुलजी शास्त्री विनौता, **23.गोहाना :** पं. आशीषजी शास्त्री मौ, **24.खेकडा :** पं. सन्मतिजी मोदी सागर, **25.गुडगाँव (झारसा) :** पं.पंकजजी शास्त्री खडैरी, **26.वल्लभगढ़ :** पं.राजेशजी शास्त्री शिवपुरी।

दिल्ली प्रान्त – **1–4. आत्मसाधना केन्द्र :** पं. कस्तुरचन्दजी बजाज विदिशा, पं. कैलाशचन्दजी जैन मोमासर, पं.अमितजी शास्त्री लुकवासा एवं पं.निकलंकजी शास्त्री कोटा, **5.शाहदरा (शिवाजी पार्क) :** पं.तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, **6.जनकपुरी (सी) :** पं.सौरवजी शास्त्री चन्देरी, **7.जनकपुरी (बी) :** पं.गौरवजी शास्त्री चन्देरी, **8.प्रशान्तविहार :** पं.पूरणचन्दजी सोनागिर एवं पं. अनुभवजी जैन मौ, **9.बाली :** पं.कस्तुरचन्दजी भोपाल, **10.महाविदेह क्षेत्र (घेवरा) :** पं. राकेशजी शास्त्री दिल्ली, **11.पालमगाँव :** पं.नितिनजी जैन नांगलराया, **12.दिल्ली केन्ट :** पं.आशीषजी शास्त्री जबेरा **13.द्वारका (से.11) :** पं.पदमचन्दजी कोटा, **14.राजेन्द्रनगर (ओल्ड) :** पं.राजेन्द्रजी जैन टीकमगढ़, **15.केशवपुरम् :** पं. सुशीलजी शास्त्री फुटेरा, **16.शक्तिनगर :** पं.संजीवजी शास्त्री उस्मानपुर, **17.आर्यपुरी (सब्जीमण्डी) :** पं. स्वतंत्रजी शास्त्री फुटेरा, **18.आर्यपुरी (सब्जीमण्डी) :** पं. अमितजी शास्त्री फुटेरा, **19.सीताराम बाजार :** पं.अनिलजी मंगलायतन, **20.इन्द्रपुरी :** पं.अमितजी शास्त्री फुटेरा, **21.मण्टोला (पहाडगंज) :** पं. संदीपजी शास्त्री गोहद, **22.वेदवाड़ा (चांदनी चौक) :** पं.अविरलजी शास्त्री विदिशा, **23.मोरी गेट :** पं.प्रशान्तजी शास्त्री मौ, **24.पटपड़गंज** : पं.नीरजजी शास्त्री खडैरी, **25. लक्ष्मीनगर :** पं.सत्येन्द्रमोहनजी दिल्ली, **26.बैंक एन्क्लेव :** पं. संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, **27.छोटा बाजार (शाहदरा) :** पं.अशोकजी गोयल दिल्ली, **28.ऋषभविहार :** पं.अशोकजी गोयल दिल्ली, **29.बाहुबली एन्क्लेव :** पं. ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, **30.सरस्वती विहार :** पं.अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ़, **31.सैनिक फार्म :** पं.राकेशजी शास्त्री दिल्ली, **32.गोविन्दपुरी (जवाहरनगर) :** पं. आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, **33.प्रल्हादपुर :** मनीषजी सिद्धान्त खडैरी **34.वसन्तकुंज:** डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, **35. मयूर विहार :** पं. चैतन्यजी शास्त्री कोटा, **36. राजा बाजार :** पं. श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, **37 विकासपुरी :** पं. नितीनजी शास्त्री विदिशा, **38.अशोका एन्क्लेव :** पं.अश्विनजी नानावटी नौगामा, **उक्त विद्वानों के अतिरिक्त दिल्ली में जिनका स्थान सुनिश्चित होना बाकी है, वे विद्वानगण 38.** पं.निखिलजी शास्त्री बण्डा, **39.** पं.पंकजजी शास्त्री बण्डा।

जयपुर – **1.** डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई, **2.** डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन, **3.** पं.शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, **4.**पं.संतोषजी झांझरी, **5.**पं.राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, **6.**पं.विनयजी पापड़ीवाल, **7.**पं.पीयूषकुमारजी शास्त्री, **8.**डॉ. प्रभाकरजी सेठी, **9.**पं.चिरंजीलालजी जैन, **10.**पं.रमेशचन्दजी जैन लवाण, **11.**पं.संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, **12.**पं.दिनेशजी शास्त्री बड़ामलहरा, **13.**पं.शशांकजी शास्त्री अभाना, **14.**पं.परेशजी शास्त्री घाटोल, **15.**पं.प्रभातजी शास्त्री टीकमगढ़, **16.**पं.देवेन्द्रजी शास्त्री अकाझिरी, **17.**पं. अनन्तवीरजी जैन फिरोजाबाद, **18.**पं.विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन,**19.**विदुषी प्रेमलताजी जैन, **20.**विदुषी प्रभाजी जैन, **21.**पं.संजीवजी शास्त्री खडैरी, **22.**पं. अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, **23.**पं.पीयूषजी शास्त्री जयपुर, **24.** पं.सचिन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा का विभिन्न उपनगरों में लाभ मिलेगा।

नोट ह्न शेष सूची वीतराग-विज्ञान (सितम्बर) में प्रकाशित की जायेगी।

प्रवचनसार का सार 57

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

यहाँ गाथा २१५ का भावार्थ भी द्रष्टव्य है ह्न

''आगमविरुद्ध आहार-विहारादि तो मुनिराज ने पहले ही छोड़ दिये हैं। अब संयम साधने की बुद्धि से मुनिराज के जो आगमोक्त आहार, अनशन, गुफादि में निवास, विहार, देहमात्र परिग्रह, अन्य मुनियों का परिचय और धार्मिक चर्चा-वार्त्ता पाये जाते हैं; उनके प्रति भी रागादि करना योग्य नहीं है, उनके विकल्पों से भी मन को रंगने देना योग्य नहीं है; इसप्रकार आगमोक्त आहार-विहारादि में भी प्रतिबंध प्राप्त करना योग्य नहीं है; क्योंकि उससे संयम में छेद होता है।''

देखो ! भावार्थ में कितने स्पष्ट एवं साफ शब्दों में लिखा है कि निर्दोष आहार, अनशन, गुफादि में निवास, विहार, देहमात्र परिग्रह, अन्य मुनियों का परिचय, धार्मिक चर्चा-वार्त्ता - इनमें राग रखना अच्छी बात नहीं है, इनके विकल्पों से भी मन को रंगने देना योग्य नहीं है। अरे भाई ! मुनिराजों को तत्त्वचर्चा का भी रंग नहीं लगना चाहिए। तत्त्वचर्चा के नाम पर प्रतिदिन घंटों गपशप लगाते रहना भी अच्छी बात नहीं है।

भावार्थ में जो यह लिखा है कि 'आहार-विहारादि में भी प्रतिबंध प्राप्त करना योग्य नहीं है', इसमें प्रतिबंध प्राप्त करने का तात्पर्य प्रतिबंधित होना है। यदि तत्त्वचर्चा के लिए 2 बजे से 3 बजे तक का समय निश्चित कर दिया, उस समय फिर दूसरी जगह जाने का विकल्प आ गया तो लोग कहेंगे कि महाराजजी ने समय दिया था और उस समय पर महाराजश्री ने तत्त्वचर्चा नहीं की, इसलिए मुनिराज इन सब के लिए अपने को प्रतिबंधित नहीं करते हैं; क्योंकि उससे संयम में छेद होता है।

तदनन्तर गाथा 216 की टीका भी द्रष्टव्य है -

''अशुद्धोपयोग वास्तव में छेद है; क्योंकि उससे शुद्धोपयोगरूप श्रामण्य का छेदन होता है और वही हिंसा है; क्योंकि (उससे) शुद्धोपयोगरूप श्रामण्य का हनन होता है। इसलिए श्रमण के, जो अशुद्धोपयोग के बिना नहीं होती; ऐसी शयन-आसन-स्थान-गमन इत्यादि में अप्रयत चर्या उसके लिये सदा ही संतानवाहिनी हिंसा ही है, जो कि छेद से अनन्यभूत है।''

टीका में अशुद्धोपयोग को छेद कहा है। वास्तव में शुद्धोपयोग से अशुद्धोपयोग में आते ही छेद हो जाता है। यह छेद तो मुनिराजों के अनिवार्य ही है; क्योंकि मुनिराजों के छटवाँ-सातवाँ गुणस्थान तो होता ही रहता है अर्थात् वे छटवें से सातवें और सातवें से छटवें गुणस्थान में झूलते ही रहते हैं। इसप्रकार छेद एवं उसकी उपस्थापना तो निरन्तर बनी रहती है।

टीका में अशुद्धोपयोग को हिंसा कहा है अर्थात् तीव्रतम शुभभाव भी हिंसा ही है; किन्तु आजकल इसे हिंसा कौन मानता है? आजकल जिस हिंसा को गृहस्थ भी नहीं करते हैं, उस हिंसा में मुनिराज प्रवृत्त दिखाई देते हैं।

मुझे याद है जब मैं छोटा था, तब मेरे पिताजी कहा करते थे कि बेटा! यदि बहुत पैसा भी हो जावे, तब भी मकान नहीं बनवाना, बना हुआ मकान ही खरीद हो लेना; क्योंकि मकान बनाने में बहुत हिंसा होती है। अभी प्राय: देखा जाता है कि नये-नये तीर्थ बनाने के लिए बड़ी-बड़ी पहाड़िया कट रही हैं, बुलडोजर चल रहे हैं।

अरे भाई ! जब मुनिराजों की चर्या में होनेवाली हिंसा के लिए प्रतिक्रमण किया जाता है; तब उपरोक्त कार्यों का निर्देशन कहाँ तक उचित है ? मुनिराज तो कायिक चेष्टा से होनेवाली छेद की भी पुन: उपस्थापना करते हैं एवं विशिष्ट गलती के लिए प्रायश्चित करते हैं।

इसके बाद प्रवचनसार ग्रंथ की वह 217 वीं प्रसिद्ध गाथा आती है, जिसके आधार पर पुरुषार्थसिद्धयुपाय में भी एक श्लोक लिखा गया है।

वह गाथा इसप्रकार है ह्न

मरदु व जियदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदस्स।।२१७।।

(हरिगीत)

प्राणी मरें या ना मरें हिंसा अयत्नाचार से।
तब बंध होता है नहीं जब रहें यत्नाचार से।।२१७।।

जीव मरे या जिये, अप्रयत आचार वाले के (अंतरंग) हिंसा निश्चित है; प्रयत के, समितिवान् के (बहिरंग) हिंसामात्र से बंध नहीं है।

सारा जगत जीवों के मरने से हिंसा मानता है; लेकिन यहाँ पर आचार्य कुन्दकुन्द कह रहे हैं कि जीव मरे या नहीं मरे, उससे हिंसा नहीं होती; लेकिन अयत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति करनेवाले के हिंसा नामक पाप निश्चित रूप से होता है।

यहाँ आचार्यदेव यह कहना चाहते हैं कि कोई ऊपर की ओर मुँह करके चल रहा हो, तब उसके पैर के नीचे आकर जीव मरे या नहीं मरे; लेकिन हिंसा का पाप अवश्य लगेगा और यदि कोई सावधानी पूर्वक चार हाथ आगे की जमीन देखकर चल रहा हो, उस समय यदि कोई सूक्ष्म जीव पैरों के नीचे आकर मर भी जाए, तब भी हिंसा नहीं होती; क्योंकि जीवों के मरने या नहीं मरने से हिंसा का कोई संबंध नहीं है।

हिंसा का संबंध अयत्नाचार से है, सावधानीपूर्वक आचरण करने वाले मुनिराज के निमित्त से यदि हिंसा भी हो, तब भी वे अहिंसक हैं और अप्रयत आचार वाले गृहस्थों के द्वारा हिंसा नहीं भी हो, तब भी वे हिंसक ही हैं।

इसी संबंध में गाथा 217 की टीका इसप्रकार है -

''अशुद्धोपयोग अन्तरंग छेद है; परप्राणों का विच्छेद बहिरंग छेद है। इनमें से अन्तरंग छेद ही विशेष बलवान है, बहिरंग छेद नहीं; क्योंकि परप्राणों के व्यपरोपण का सद्भाव हो या असद्भाव, जो अशुद्धोपयोग के बिना नहीं होता ह्न ऐसे अप्रयत आचार से प्रसिद्ध होनेवाला (जानने में आनेवाला) अशुद्धोपयोग का सद्भाव जिसके पाया जाता है, उसके हिंसा के सद्भाव की प्रसिद्धि सुनिश्चित है; और इसप्रकार जो अशुद्धोपयोग के बिना होता है ह्न ऐसे प्रयत आचार से प्रसिद्ध होनेवाला अशुद्धोपयोग का असद्भाव जिसके पाया जाता है, उसके परप्राणों के व्यपरोपण के सद्भाव में भी बंध की अप्रसिद्धि होने से, हिंसा के अभाव की प्रसिद्धि सुनिश्चित है।

अंतरंग छेद ही विशेष बलवान है, बहिरंग छेद नहीं ह्न ऐसा होने पर

भी बहिरंग छेद अंतरंग छेद का आयतन मात्र है; इसलिए बहिरंग छेद को स्वीकार तो करना ही चाहिये अर्थात् उसे मानना ही चाहिये।''

इस टीका में स्पष्ट कहा है कि अशुद्धोपयोग हिंसा ही है। हम सभी निरन्तर हिंसक हैं; क्योंकि हम लोग शुद्धोपयोग में नहीं हैं।

अरे भाई ! जो प्रवचन सुनते हैं, जिन्होंने कभी चींटी को भी नहीं मारा, वे भी हिंसक ही हैं; क्योंकि वे अशुद्धोपयोग में हैं। जिनके शुद्धोपयोग नहीं है; वे हिंसक ही हैं, शुद्धोपयोगी ही एकमात्र अहिंसक है।

यद्यपि गृहस्थों को भी इस बात का विचार करना चाहिए; तथापि कदाचित् वे न भी करें; तब भी मुनिराजों को तो इस प्रकरण का गहराई से अध्ययन करके इस महासत्य को स्वीकार करना ही चाहिए और जितना भी संभव हो, जीवन में अपनाना चाहिए।

तदनन्तर अन्तरंग छेद सर्वथा त्याज्य है ह्न ऐसा उपदेश करनेवाली २१८वीं गाथा इसप्रकार है ह्न

अयदाचारो समणो छस्सु वि कायेसु वधकरो त्ति मदो।
चरदि जदं जदि णिच्चं कमलं व जले णिरुवलेवो ।।२१८।।

(हरिगीत)

जलकमलवत निर्लेप हैं जो रहें यत्नाचार से।
पर अयत्नाचारि तो षट्काय के हिंसक कहे।।२१८।।

अप्रयत आचारवाला श्रमण छहों काय संबंधी वध करनेवाला मानने में आया है; यदि सदा प्रयतरूप से आचरण करे तो जल में कमल की भाँति निर्लेप कहा गया है।

इस गाथा में कहा है कि आचरण की शुद्धि बहुत जरूरी है। यद्यपि परवस्तु के कारण रंचमात्र भी हिंसा नहीं होती; तथापि परिणामों की विशुद्धि के लिए अप्रयत्नाचार को तो छोड़ना ही चाहिए।

इसी गाथा का भावार्थ इसप्रकार है –

''शास्त्रों में अप्रयत-आचारवान् अशुद्धोपयोगी को छह काय का हिंसक कहा है और प्रयत आचारवान् शुद्धोपयोगी को अहिंसक कहा है; इसलिए शास्त्रों में जिस-जिस प्रकार से छहकाय की हिंसा का निषेध किया गया हो, उस-उस समस्त प्रकार से अशुद्धोपयोग का निषेध समझना चाहिए।''

यहाँ अशुद्धोपयोग के निषेध से तात्पर्य अशुभोपयोग और शुभोपयोग ह्न दोनों का निषेध है; क्योंकि दोनों ही अशुद्धोपयोग हैं।

शुभोपयोग को धर्म मान कर उससे निर्जरा माननेवालों को इस प्रकरण पर ध्यान देना चाहिए।

इसी संदर्भ में गाथा २१९ का भावार्थ भी द्रष्टव्य है ह्न

''अशुद्धोपयोग का असद्भाव हो, तथापि काय की हलन-चलनादि क्रिया होने से परजीवों के प्राणों का घात हो जाता है। इसलिए कायचेष्टापूर्वक परप्राणों के घात से बंध होने का नियम नहीं है।

अशुद्धोपयोग के सद्भाव में होनेवाले कायचेष्टापूर्वक परप्राणों के घात से तो बंध होता है और अशुद्धोपयोग के असद्भाव में होनेवाले कायचेष्टापूर्वक परप्राणों के घात से बंध नहीं होता; इसप्रकार कायचेष्टापूर्वक होनेवाले परप्राणों के घात से बंध का होना अनैकान्तिक होने से उसके छेदपना अनैकान्तिक है, नियमरूप नहीं है।

जिसप्रकार भाव के बिना भी परप्राणों का घात हो जाता है; उसीप्रकार भाव न हो; तथापि परिग्रह का ग्रहण हो जाय ह्न ऐसा कभी नहीं हो सकता। जहाँ परिग्रह का ग्रहण होता है; वहाँ अशुद्धोपयोग का सद्भाव अवश्य होता ही है।

इसलिए परिग्रह से बंध का होना ऐकान्तिक-निश्चित-नियमरूप है। इसलिए परिग्रह के छेदपना ऐकान्तिक है। ऐसा होने से ही परमश्रमण ऐसे अर्हन्त भगवन्तों ने पहले से ही सर्व परिग्रह का त्याग किया है और अन्य श्रमणों को भी पहले से ही सर्व परिग्रह का त्याग करना चाहिये।''

यहाँ पर मैं परिग्रह और हिंसा में एक अंतर स्पष्ट करना चाहता हूँ। वह अंतर यह है कि 'परप्राणों का घात हो जाय और हिंसा नहीं हो' – ऐसा तो हो सकता है; किन्तु 'परिग्रह हो और पाप न हो' – ऐसा नहीं हो सकता है। भाव के बिना हिंसा तो हो सकती है अर्थात् प्राणों का घात तो हो सकता है; लेकिन भावों के बिना परपदार्थों का ग्रहण नहीं हो सकता।

तदनन्तर आचार्य अमृतचंद्र कहने योग्य सब कहा गया है' इत्यादि कथन श्लोक के माध्यम से कहते हैं ह्न

(वसंततिलका)

वक्तव्यमेव किल यत्तदशेषमुक्त,
मेतावतैव यदि चेतयतेऽत्र कोऽपि।
व्यामोहजालमतिदुस्तरमेव नूनं,
निश्चेतनस्य वचसामतिविस्तरेऽपि ।।१४।।

(दोहा)

जो कहने के योग्य है कहा गया वह सब्ब।
इतने से ही चेत लो अति से क्या है अब्ब ।।१४।।

जो कहने योग्य था; वह अशेषरूप से कह दिया गया है, इतने मात्र से ही कोई चेत जाय, समझ ले तो समझ ले और न समझे तो न समझे; अब वाणी के अतिविस्तार से क्या लाभ है ? क्योंकि निश्चेतन (जड़वत्, नासमझ) के व्यामोह का जाल वास्तव में अति दुस्तर है।

तात्पर्य यह है कि नासमझों को समझाना अत्यन्त कठिन है।

यह श्लोक अत्यंत मार्मिक है। आचार्य अमृतचंद्र ने समयसार की आत्मख्याति टीका में तो 278 श्लोक लिखे है; किन्तु प्रवचनसार की टीका में २२ छन्द ही लिखे हैं। उन्हीं में से एक छन्द यह भी है।

इस कलश में आचार्य कह रहे हैं कि जो समझाया जा सकता था, वह हमने समझा दिया। जिन्हें समझ में आना होगा, उन्हें इतने से ही समझ में आ जाएगा और जिन्हें समझ में नहीं आना है; उनके लिए कितना ही विस्तार क्यों न करें, समझ में नहीं आएगा; अतएव मैं इस चर्चा से अब विराम लेता हूँ। ●

जो सो रहा व्यवहार में वह जागता निज कार्य में।
जो जागता व्यवहार में वह सो रहा निज कार्य में।।

ह्न मोक्ष पाहुड, गाथा-31

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल विद्वत्परिषद् के नए अध्यक्ष

जयपुर (राज.) : प्रातःस्मरणीय पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी द्वारा स्थापित श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् का इक्कीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में 30 जुलाई को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के प्रथम सत्र में निवर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें चुनाव अधिकारी श्री अनूपचन्दजी एडवोकेट, फिरोजाबाद ने सर्वसम्मति से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अध्यक्ष पद पर चुने जाने की घोषणा की। सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया। इस अवसर पर नई कार्यकारिणी का गठन किया गया।

द्वितीय सत्र में सम्पन्न हुई बैठक में नई कार्यकारिणी के सदस्यों ने पदाधिकारियों का चयन किया। नवीन कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार किया गया ह्न

अध्यक्ष : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल जयपुर, **कार्याध्यक्ष:** डॉ. सुदर्शनलाल जैन वाराणसी, **उपाध्यक्ष :** पं. विमलकुमारजी सोंरया टीकमगढ़, **महामंत्री :** डॉ. सत्यप्रकाश जैन दिल्ली, **मंत्री :** डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई, **संगठन मंत्री :** श्री अनूपचन्द जैन एडवोकेट फिरोजाबाद, **प्रचार व प्रकाशन मंत्री :** श्री अखिल बंसल जयपुर, **कोषाध्यक्ष :** डॉ. अशोक गोयल शास्त्री दिल्ली, **पुरस्कार समिति संयोजन :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल जयपुर ।

कार्यकारिणी सदस्य : ब्र. यशपाल जैन जयपुर, डॉ. एस.पी. पाटिल सांगली, डॉ. नन्दलाल जैन रीवा, डॉ. ऋषभचन्द फौजदार वैशाली (बिहार), डॉ. लालचन्द जैन भुवनेश्वर (उड़ीसा), डॉ. पी.सी. जैन जयपुर, डॉ. उदयचन्द जैन उदयपुर, डॉ. बी.एल. सेठी झुंझुनूं, डॉ. प्रेमचन्द रांवका जयपुर, डॉ. कमलेश जैन जयपुर, पण्डित शान्तिकुमार पाटील जयपुर, श्री सतीश जैन (आकाशवाणी)दिल्ली, पं. राजकुमार शास्त्री बाँसवाड़ा ।

विशेष आमंत्रित सदस्य : डॉ. जीवन्धर होसपेटे बैंगलौर, डॉ. पी.आर. जोडहट्टीधारवाड (कर्ना.), पं. रतनचन्द कोटी इण्डी (महा.), श्री मनोहर मारवडकर नागपुर, श्री मिलापचन्द डण्डिया जयपुर, डॉ. निर्मला सांघी जयपुर ।

अधिवेशन का शुभारंभ श्री हीरालालजी बोहरा ने मंगलाचरण द्वारा किया। मुख्य वक्ताओं में सर्वश्री पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. सुदर्शनलाल जैन, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल, डॉ. सत्यप्रकाश जैन तथा डॉ. ऋषभचन्द फौजदार आदि प्रमुख थे। डॉ. भारिल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नियमित स्वाध्याय एवं सदाचार युक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया।

अधिवेशन में दिल्ली के पूर्व प्राचार्य श्री कुन्दनलाल जैन को उनकी अनुपस्थिति में गणेशप्रसाद वर्णी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार में 5,000 रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, शॉल एवं श्रीफल भेंट किया गया। पुरस्कार उनके पुत्र श्री राजेश जैन ने ग्रहण किया। ध्यान रहे यह पुरस्कार डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से विद्वत्परिषद द्वारा दिया जाता है। इस अवसर पर समन्वयवाणी जिनागम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित डॉ. राजेन्द्र बंसल की कृति 'अष्टपाहुड : एक अध्ययन' का विमोचन किया गया।

अधिवेशन में अनेक प्रस्ताव पारित किए गए तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। सभा का संचालन श्री अखिल बंसल ने किया ।

भ. महावीर एवं ब्र. पूरणचन्द लुहाडिया पुरस्कार-2006

प्रबन्धकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी के वर्ष 2006 के महावीर पुरस्कार के लिए जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति आदि से संबंधित किसी भी विषय की पुस्तक/शोध प्रबन्ध की चार प्रतियाँ दि. 30 सितम्बर 06 तक आमन्त्रित हैं। पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को 21001/ह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाडिया साहित्य पुरस्कार 5001/ ह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर 2002 के पश्चात् प्रकाशित पुस्तक ही इसमें सम्मिलित की जा सकती है।

यह सूचित करते हुए हर्ष है कि वर्ष 2005 का भ. महावीर पुरस्कार डॉ. श्रीमती ज्योति जैन एवं श्री कपूरचन्दजी जैन, खतौली को उनकी कृति '**स्वतंत्रता संग्राम में जैन**' पर दि. 14 अप्रेल 06 को श्री महावीरजी में महावीर जयन्ती के वार्षिक मेले के अवसर पर प्रदान किया गया।

पुरस्कारों की नियमावली तथा आवेदनपत्र प्राप्त करने के लिए संस्थान कार्यालय श्री दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-04 से पत्र व्यवहार करें। **– डॉ. कमलचन्द सोगाणी**

जयपुर शिविर 28 सितम्बर से 7 अक्टू. 06 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष दशहरे के अवसर पर लगनेवाले शिविर की तिथि इसवर्ष **गुरुवार, दिनांक 28 सितम्बर से शनिवार, 7 अक्टूबर 2006** तक लगना निश्चित की गई है ।

अत: समस्त साधर्मी भाई बहिनों को **तिथि का ध्यान रखते हुये** शिक्षण शिविर में पधारने का भावभीना आमंत्रण है।

साधना चैनल पर रात्रि 10.20 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अगस्त (द्वितीय) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127